परमेश्वर के हथियार

(6:13-18)

शैतान इस ताक में रहता है कि कब अवसर पाकर हमें अपने चक्र में फंसाए। शैतान क्रूर है। पिछले पाठ में हमने देखा था कि वह कैसे हम पर युद्ध थोपता है। वह ज्यादा से ज्यादा लोगों के नाश की तलाश में रहता है और कभी थकता नहीं। यह समझ लें कि शैतान आपके परिवार का सबसे बड़ा शत्रु है। उसके आक्रमण का सामना करने के लिए तैयार रहें। जब तक आप रहेंगे तब तक वह आक्रमण करता है और करता रहेगा।

इससे इफिसियों के नाम पौलुस के अंतिम निर्देशों के महत्व का पता चलता है:

> इसलिए परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में साज़्हना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको। जो सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहिन कर। और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिस से तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको। और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती किया करो (6:13-18)।

ज़्या आपको कभी लगा है कि आप पर आत्मिक आक्रमण हुआ है ? हो सकता है कि आप निराश या हताश हों या आप पर बहुत बड़ी परीक्षा पड़ी हो। आप अपने जवान बच्चों पर हैरान होंगे: ज़्या उसके मित्र उसे नशे का आदी बनाने की कोशिश तो नहीं कर रहे हैं ? ज़्या उसकी सहेलियां उसे गलत राह पर ले जा रही हैं ? स्थानीय मण्डली ज़्या कर रही है ? ज़्या ऐसे मन मुटाव केवल विचारों के अंतर के कारण हैं या शैतान संगति में फूट डालने की कोशिश कर रहा है ? यदि लगे कि आपके जीवन में अस्त व्यस्तता ही है, आप और आपके आस पास के लोग पतन की ओर जा रहे हैं, आपके संसार में फूट पड़ रही है, तो आप पर आत्मिक आक्रमण हुआ हो सकता है। पौलुस के शज़्दों में आपके लिए अच्छी खबर है। आप इस आक्रमण का जवाब दे सकते हैं। आप इसका कुछ कर सकते हैं। आप विजयी हो सकते हैं !

मसीही लोग परमेश्वर पर भरोसा रखकर और उसके दिए हथियारों का इस्तेमाल करके शैतान के आक्रमणों पर विजय पा सकते हैं।

लड़ाई के हथियार

आत्मिक युद्ध के लिए आत्मिक हथियारों की ही आवश्यकता होती है। आत्मिक आक्रमण होने पर बंदूकें, सुरक्षा प्रणाली, और कराटे आदि किसी प्रकार आपके परिवार की सुरक्षा नहीं कर पाएंगे। आत्मिक आक्रमण का दायरा इस सांसारिक, दिखाई देने वाले संसार से बाहर एक और संसार है। इफिसियों की पत्री में दो बार पौलुस ने अदृश्य, आत्मिक शक्तियों से आत्मिक युद्ध की बात की। अध्याय 2 में उसने अपने पाठकों को मसीह के बिना उनके पुराने जीवन का स्मरण कराया: ''और उस ने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे। जिस में तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न मानने वालों के कार्य करता है'' (2:1, 2)। पौलुस का यह कहने का क्या अर्थ था? किसी समय उसके पाठक शैतान के साथ युद्ध में हार मान रहे थे।

मसीह में, हम विजयी पक्ष की ओर आ जाते हैं। क्या इसका अर्थ यह है कि युद्ध जीत लिया गया है? नहीं, शैतान बाहर ही है। यदि मैं अपना ध्यान नहीं रखता, तो वह मुझ पर विजय पा लेगा। परन्तु यदि मैं परमेश्वर के वचन की ओर ध्यान देता हूं, तो मैं परमेश्वर से सामर्थ लेकर शैतान को हराने के लिए परमेश्वर के हथियारों का इस्तेमाल कर सकता हूं।

परमेश्वर के हथियारों में क्या-क्या शामिल है? पौलुस ने ये छह चीज़ें बताई हैं।

पहली तो सत्य का कमरकसा है। ''सत्य से अपनी कमर कसकर, ...'' (आयत 14क)। पौलुस के समय में सिपाही की वर्दी की एक चीज़ कमरकसा अर्थात बैल्ट होती थी। इस बैल्ट से दो काम लिए जाते थे: (1) लड़ाई में आगे बढ़ने या लड़ते समय कपड़ों को कस कर रखना, और (2) तलवार को सही जगह रखना। जब सिपाही अपनी बैल्ट बांध लेता तो इसका अर्थ होता था कि वह लड़ाई के लिए तैयार है। यह काम करने के लिए सिपाही का आत्मविश्वास बढ़ाता था।

शैतान से लड़ते हुए, हम आत्मविश्वास से अर्थात सत्य से जुड़े आत्मविश्वास से ऐसा कर सकते हैं। सत्य शिक्षा तथा एकाग्रता दोनों के लिए इस्तेमाल हुआ है। न केवल हमारा विश्वास परमेश्वर के सत्य में होना चाहिए बल्कि हमें दिन-ब-दिन उसमें रहने की भी कोशिश करनी आवश्यक है। हमें न केवल परमेश्वर के वचन का प्रचार करना चाहिए, बल्कि अपने जीवनों से इसे दिखाना भी चाहिए। शिक्षा की सच्चाई और इसके अनुसार जीने की गंभीरता के मेल से मसीही व्यक्ति को आत्मविश्वास और शैतान से लड़ने की तैयारी मिलती है। सच्चाई को जानना ही काफी नहीं है। हमें इसके अनुसार जीने के लिए गंभीरता से प्रयास भी करने चाहिए।

दूसरा हथियार धार्मिकता की झिलम है। हमें ''धार्मिकता की झिलम पहनकर'' (आयत 14ख) स्थिर रहना चाहिए। सिपाही की झिलम धातु का एक टुकड़ा होती थी, जो उसके शरीर के अग्र भाग को ढांपकर सुरक्षित रखती थी। पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने हमें धार्मिकता का कवच दिया है। धार्मिकता परमेश्वर के साथ हमारे खड़े होने के लिए इस्तेमाल होती है। यद्यपि हमने पाप किया है और अनन्त दण्ड के योग्य हैं परन्तु परमेश्वर

ने मसीह में मसीही लोगों के धर्मी होने का ऐलान कर दिया है। हम पढ़ते हैं, ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं'' (2 कुरिन्थियों 5:21)।

हम धार्मिकता से जीवन व्यतीत करना चुन सकते हैं। हम ऐसा जीवन जीना चुन सकते हैं जिससे परमेश्वर को महिमा मिलती हो। वह पसन्द हमें हर दिन, पूरा दिन, शैतान द्वारा हमारे मार्ग में भेजी हर चीज़ को नज़रअन्दाज करने में सहायक होगी।

तीसरी चीज़ आत्मिक जूता है। हम ''[अपने] पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर'' (6:15) खड़े होते हैं। रोमी सिपाही ऐसे जूते पहनते थे जिनके पंजे खुले होते थे। तले के नीचे कील ठुके होते थे। उनका काम वही होता था जो आज फुटबॉल के खिलाड़ियों द्वारा पहने जाने वाले जूतों का है। उससे सिपाही आकर्षक लगते और वे लड़ते समय स्लिप होने से बच जाते थे। उनकी अधिकतर लड़ाइयां आमने-सामने हाथों से होती थीं, जिस कारण रोमी सिपाहियों को इन जूतों का लाभ होता था।

मसीही लोगों को संघर्ष में गिरने से बचने के लिए परमेश्वर की ओर से शांति मिलती है। पहले तो यह *परमेश्वर के साथ* मेल है: ''सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें'' (रोमियों 5:1)। हमें *परमेश्वर की* शांति भी मिली है। यह वह शांति है जो सारी समझ से परे है। ''परमेश्वर की शान्ति, जो समझ के बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी'' (फिलिप्पियों 4:7)। परमेश्वर के साथ-साथ चलने से हमारी खुशहाली का पता चलता है और शैतान इससे घृणा करता है। वह हमें उलझाए रखना, बिलों का भुगतान करने के लिए चिंतित और लोगों से मिलने, बिमारियों से निराश, तनाव ग्रस्त और ज़ावनात्मक तौर पर थके हुए देखना चाहता है। शैतान हमारी शांति चुराना चाहता है। मसीही लोगों को, जिन्हें संघर्षों में भी परमेश्वर की शांति लेना आता है, देखकर उसे निराशा होती है।

चौथा विश्वास की ढाल है। ''और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिस से तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको'' (आयत 16)। रोमी सिपाही की ढाल बहुत बड़ी होती थी। यह सिपाही के कद जितनी ही लम्बी और चौड़ी होती थी। यह उसे जलते हुए तीरों से बचाव के लिए विशेष रूप से पूरी तरह से ढकती थी। हमारा विश्वास हमारे लिए यही करता है। विश्वास परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को लेकर शैतान के तीरों के विरुद्ध खड़ा होने के लिए उनका इस्तेमाल करता है जिसमें भय, निराशा, ठुकराए जाना, अलोचना और बाकी सब कुछ है।

हाल ही में मसीही लोगों के एक समूह ने परमेश्वर की कुछ प्रतिज्ञाओं को पढ़ा और हममें से हर एक ने अपने जीवन में आने वाले अनुभवों के कारण उन प्रतिज्ञाओं को ले लिया। यह जानकर बड़ा प्रोत्साहन मिला कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं जीवन के हर क्षेत्र के लिए हैं। वे हमें ऊपर उठाती हैं, हमें चलाती हैं और शैतान से हमारी रक्षा करती हैं।

पांचवां हथियार उद्धार का टोप है। ''उद्धार का टोप, ... ले लो'' (आयत 6:17क)। टोप सिर पर लगने वाली चोट से सिपाही की रक्षा करता है। परमेश्वर की ओर से हमारा

उद्धार परमेश्वर के यह कहने का ढंग है, ''यदि तुम विश्वास से चलते रहो, तो शैतान तुम्हें कभी चोट नहीं पहुंचा सकता। वह तुम्हारा उद्धार छीन नहीं सकता।'' आप उद्धार की ओर अपनी पीठ कर सकते हैं, परन्तु शैतान इसे आप से छीन नहीं सकता। परमेश्वर आपको उद्धार का टोप देता है। एक मसीही के रूप में आप मसीह में मिलने वाले अनन्त जीवन के लिए आश्वस्त हो सकते हैं।

छठी आत्मा की तलवार है। परमेश्वर की ओर से मिलने वाले हथियारों में ''आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है'' (6:17ख) भी शामिल है। इन छह चीज़ों में से केवल तलवार का इस्तेमाल ही आक्रमण का जवाब देने के लिए किया जा सकता है। परमेश्वर का वचन यही काम करता है। इसमें बचाव की तथा जवाब देने की क्षमता है। बचाव करते हुए, हम परीक्षा का सामना करने के लिए परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल करते हैं, जैसे जंगल में शैतान के साथ सामना करने के समय यीशु ने पवित्र शास्त्र का हवाला देकर किया था (मत्ती 4:1-11)। आक्रमणात्मक रूप में हम उसके वचन का इस्तेमाल सुसमाचार की पहचान में करते हैं। सुसमाचार उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है (रोमियों 1:16)। हम उसके वचन का इस्तेमाल लोगों को अंधकार के राज्य से परमेश्वर के राज्य में लाने के लिए करते हैं। वचन हमें शैतान से लड़ने में सहायता करता है।

ये छह चीज़ें मिलकर परमेश्वर के पूरे हथियार बनती हैं। ये हथियार परमेश्वर उपलब्ध कराता है, परन्तु पहनने हमें ही हैं। क्या आपने परमेश्वर के हथियार पहने हैं?

क्या आप शैतान का सामना उस आत्मविश्वास से करते हैं,जो सच्चे मन से परमेश्वर के साथ चलने से आता है? क्या आप जीवन की पसन्द परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चुनने के लिए हर रोज समर्पण के साथ शैतान से लड़ते हैं? क्या आप परमेश्वर द्वारा दी गई शांति से अपनी भावनाओं पर शैतान के आक्रमण का मुकाबला करते हैं? क्या शैतान द्वारा आपकी ओर किसी भी चीज़ को फैंकने के समय अपनी रक्षा के लिए आप परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में भरोसा करते हैं? क्या आपको अपने उद्धार का आत्मविश्वास है? क्या आप हर रोज परमेश्वर के वचन के लिए समय देते हैं ताकि आप अपने जीवन में उसका इस्तेमाल कर सकें? क्या आप ने परमेश्वर के सारे हथियार पहने हैं? परमेश्वर हमें लड़ाई के हथियार देता है।

लड़ाई के लिए प्रार्थना

पौलुस ने एक और महत्वपूर्ण साधन का उल्लेख किया जो परमेश्वर अपने लोगों को देता है: ''और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती किया करो'' (6:18)। पौलुस ने कहा कि परमेश्वर लड़ाई के लिए हमें प्रार्थना देता है। क्यों? क्योंकि परमेश्वर के हथियार पहनने के लिए प्रार्थना की आवश्यकता है। प्रार्थना से परमेश्वर पर हमारी निर्भरता का पता चलता है। प्रार्थना न कर पाने का अर्थ है, ''मुझे परमेश्वर की आवश्यकता नहीं। मैं उसके बिना भी अच्छा कर सकता हूं। मैं खुद कर सकता हूं।'' ऐसा व्यवहार आत्मिक पराजय की गारंटी है। हम में से कोई भी अपने दम पर शैतान से युद्ध नहीं जीत सकता।

प्रार्थना हमें परमेश्वर पर ध्यान केन्द्रित रखने में सहायता करती है।

6:18 में प्रार्थना के सम्बन्ध में ''हर समय, हर प्रकार, सब'' के पौलुस के निर्देशों पर ध्यान दें। उसके शब्दों में मसीहियों के रूप में ''सब'' शब्द चार प्रकार से इस्तेमाल कर हमारे जीवनों में प्रार्थना की व्यापकता की ओर ध्यान दिलाया गया है।

1. *हमें हर समय प्रार्थना करनी चाहिए।* शैतान के विरुद्ध लड़ने और डटे रहने के लिए, हमें दैनिक अनुशासन के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

2. *हमें हर प्रकार की प्रार्थना और बिनती करनी चाहिए।* हमारे जीवन में जो भी चल रहा है उसके अनुसार हमें परमेश्वर से अलग-अलग तरह से बात करनी चाहिए। किसी समय अंगीकार, धन्यवाद, निवेदन, प्रशंसा, स्तुति, गीत, या किसी और प्रकार की प्रार्थना की आवश्यकता हो सकती है।

3. *हमें सचेत होकर प्रार्थना करनी चाहिए।* जब यीशु गतसमनी में प्रार्थना कर रहा था, तो चेलों को नींद आ गई थी। अक्सर लोग ऐसा ही करते हैं। हम सो जाते हैं या सुस्ती कर जाते हैं जबकि हमें प्रार्थना करते रहना चाहिए।

4. *हमें सब मसीहियों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।* परमेश्वर चाहता है कि हम शैतान के विरुद्ध मिलकर काम करें। परमेश्वर का परिवार एक दूसरे से मिलकर प्रार्थना करके शैतान के बड़े-बड़े आक्रमणों का मुकाबला कर सकता है।

वर्षों से, मैं अपने आप को प्रार्थना के लिए अनुशासित करने की कोशिश कर रहा हूं। दूसरे मसीही लोगों ने मुझे प्रार्थना करने में अपने नाकाम रहने की बातें बताई हैं। प्रार्थना की बात पर हम ढीले क्यों पड़ जाते हैं? मुझे इसके कई कारण लगते हैं, परन्तु आइए *डिज़ायरिंग गॉड* नामक अपनी पुस्तक में जॉन पाइपर के विचार देखते हैं।

> यदि मैं गलत नहीं हूं, तो परमेश्वर की संतान में बहुत से लोगों का जीवन में प्रार्थना को महत्व न देने का मुख्य कारण यह नहीं है कि हम प्रार्थना करना नहीं चाहते, बल्कि प्रार्थना की योजना का न होना है। यदि आप चार सप्ताह की छुट्टी लेना चाहें, तो किसी सुबह उठकर आप यह नहीं कहते, ''चलो आज चलते हैं!'' आपने कोई तैयारी तो की नहीं है। आपको पता भी नहीं है कि कहां जाना है। क्योंकि कोई योजना नहीं बनाई गई है।
>
> लेकिन बहुत से लोग प्रार्थना के साथ ऐसा ही करते हैं। हम हर रोज़ उठते हैं और महसूस करते हैं कि हमारे जीवन में प्रार्थना का समय महत्वपूर्ण होना चाहिए, परन्तु स्वयं को कभी तैयार नहीं करते। हमें पता नहीं होता की कहां जाना है। कोई योजना जो नहीं बनाई है। समय नहीं है न। जगह नहीं है। कोई ढंग नहीं है। हम इतना जानते हैं कि योजना बनाने का उल्टा प्रार्थना में गहराई के साथ अनुभव की कमी है। योजना का विपरीत पुरानी लीक है। यदि आप छुट्टियों की योजना नहीं बनाते तो सम्भवतया आप दिन भर बैठकर टीवी ही देखेंगे! योजनारहित आत्मिक जीवन पतन की ओर ले जाता है। एक दौड़ दौड़नी है और एक युद्ध लड़ना है। यदि आप प्रार्थना के जीवन में नई ताज़गी लाना चाहते हैं तो आपको

योजना बनानी पड़ेगी।

इसलिए, मेरा सुझाव केवल इतना है: आज ही समय निकालकर अपनी प्राथमिकताओं पर फिर से विचार करें और देखें कि उन में प्रार्थना कहां है। कुछ नये निर्णय लें। परमेश्वर के साथ कोई नया समझौता करें। समय बांधें। जगह नियुज़्त कर लें। अपनी अगुआई के लिए पवित्र शास्त्र का कोई भाग चुन लें। व्यस्तता के दबाव में जुल्म न सहें। हम सब को बीच में सुधार की आवश्यकता होती है। आज के दिन को प्रार्थना की ओर मुड़ने वाला दिन बना दें- परमेश्वर की महिमा तथा अपने पूर्ण आनन्द के लिए।[1]

सारांश

शैतान के विरुद्ध लड़ने के लिए आप ज़्या कदम उठाएंगे ? आपके परिवार पर आत्मिक आक्रमण होने पर आप उनका बचाव कैसे करेंगे। अंधकार की शज़्तियों के विरुद्ध ''अंत तक इस लड़ाई'' को जीतने के लिए आप साथी मसीहियों की सहायता कैसे कर सकते हैं ?

आपका उज़र प्रेरित के इन शज़्दों में मिल सकता है:

> इसलिए परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में साज़्हना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको। जो सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहिन कर। और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर। और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिस से तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको। और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती किया करो (6:13-18)।

टिप्पणी

[1]आर. कैंट प्यूगस, *इफिसियंस: द मिस्टरी ऑफ़ द बॉडी ऑफ़ क्राइस्ट* (व्हीटन, इलिनोइस: क्रॉसवे बुज़्स, 1990), 257-58 द्वारा उद्धृत जॉन पाइपर, *डिज़ाइरिंग गॉड* (पोर्टलैंड, ओरिन.: मल्टनोमा, 1986), 150-51.